तमाम सलफियों को फ़ज़ीलत अश-शैख़ अल-अल्लामा रबी बिन हादी अल मदख़ली(अल्लाह उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाए) की ख़ूबसूरत नसीहतें

قال الشيخ ربيع بن هادي المدخلي حفظه الله:

فالتألف والمودة والمحبة والرفق واللين مع السلفي ،وإذا كان عنده خطأ ينصح بحكمة، لأنه وصل الأمر إلى أن الإنسان إذا أخطأ خطأ صغيراً هجروه وهذا ماكان يفعله الصحابة رضي الله عنهم ولاعند أحمد وأصحابه، إنما هذه طريقة الحدادية ومن دار في فلكها، والحدادية أنشئت لتمزيق السلفيين وضرب المنهج السلفي..

शैख़ रबी बिन हादी अल मदख़ली (अल्लाह उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाए)कहते हैं:

तो सलफी के साथ मिल जुलकर रहो, उनसे दोसती और मोहब्बत रखो, उनसे नरमी बरतो, और अगर उससे ग़लती हो जाए तो हिकमत के साथ उसे नसीहत करो, क्योंकि स्थिति यहाँ तक पहुंच चुकी है कि अगर किसी इंसान से छोटी सी ग़लती भी सरज़द हो रही है तो लोग उससे हजर(उसका बहिष्कार) कर रहे हैं। ऐसा सहाबा (رضي الله عنهم) नहीं किया करते थे। ये हददादियों और जो इनके गिर्द होते हैं इनका तरीक़ा है। और हददादिया तो सलफियत को पारा पारा करने और सलफी मनहज को क्षति पहुचाने के लिए ही बनाई गई है।

(اللباب من مجموع نصائح وتوجيهات الشيخ ربيع للشباب /ص143)

ashabulhadith.com/main/connect

Play Store

Study Circle

ashabulhadith.com

तमाम सलफियों को फ़ज़ीलत अश-शैख़ अल-अल्लामा रबी बिन हादी अल मदख़ली(अल्लाह उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाए) की ख़ूबसूरत नसीहतें

قال الشيخ ربيع بن هادي المدخلي حفظه الله:

فبعض الناس قد يكون صارفا للناس صادا لهم بأخلاقه السيئة وتعاملاته الرديئة، فاياكم، ثم إياكم الشدة في تعامل بعضكم بعضا وفي التعامل مع الناس وفي تبليغ دعوة الله تبارك وتعالى..

शैख़ रबी बिन हादी अल मदख़ली (अल्लाह उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाए)कहते हैं:

तो बाज़ लोग अपने बुरे व्यव्हार और बुरे सुलूक से लोगों को बहकाने वाले और उनका रास्ता रोकने वाले बन जाते हैं। तो ख़बरदार मैं तुम्हें फिर से ख़बरदार करता हूँ आपस में एक दूसरे से सुलूक करने में सख़्ती इख़्तियार करने से और इसी तरह लोगों के साथ सुलूक करने में और इसी तरह अल्लाह तबारक व तआला की दावत लोगों तक पहुंचाने में

(اللباب من مجموع نصائح وتوجيهات الشيخ ربيع للشباب ص/ 289)

तमाम सलफियों को फज़ीलत अश-शैख़ अल-अल्लामा रबी बिन हादी अल मदख़ली(अल्लाह उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाए) की ख़ूबसूरत नसीहतें

وقال الشيخ ربيع حفظه الله ورعاه:

كثير من إخواننا قد يقعون في الأخطاء نحن نصبر عليهم ونناصحهم ونتأنى بهم ولانستعجل عليهم فإن العجلة والتسرع بالهجر والمقاطعة والمصارمة، هذه لاتبقي ولاتذر للدعوة السلفية ولا لأهلها ..

शैख़ रबी बिन हादी अल मदख़ली(अल्लाह उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाए)कहते हैं:

बहुत सारे हमारे भाई ग़लतियों में पड़ जाते हैं, हम उनके मुआमले में सब्र से काम लेते हैं और उनहें नसीहत करते हैं और उनके मुआमले में आहिस्तगी से काम लेते हैं और जल्दबाज़ी नहीं करते, कयोंकि हजर (बहिष्कार) और सख़्ती करने में जल्दबाज़ी करने से ना सलफ़ी दावत बाक़ी रहे गी और ना ही इसके लिए और ना ही इसकी तरफ़ दावत देने वालों के लिए कुछ बाक़ी छोड़े गी।

(اللباب من مجموع نصائح الشيخ ربيع للشباب ص / 300)

ashabulhadith.com/main/connect

Play Store Study Circle

ashabulhadith.com

#उलेमा-नसीहतें

तमाम सलफियों को फ़ज़ीलत अश-शैख़ अल-अल्लामा रबी बिन हादी अल मदख़ली(अल्लाह उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाए) की ख़ूबसूरत नसीहतें

قال الشيخ ربيع بن هادي المدخلي حفظه الله:-

فأوصيكم يا إخوة أن تسيروا في طريق السلف الصالح تعلُّماً وأخلاقاً ودعوة ، لا تشدد، لا غلو، دعوة يرافقها الحلم والرحمة والأخلاق العالية-والله-تنتشر الدعوة السلفية بهذه الأساليب الطيبة، أقول: بعض الناس ينتمون ظلماً إلى هذا المنهج، برزوا بأساليب وأخلاق رديئة، ومنها ضرب السلفية باسم السلفية، فشوهوا الدعوة السلفية بهذه الطريقة، فأنا أنصح الشباب أن يتقي الله- عز وجل-، وأن يتعلم العلم النافع، وأن يعمل العمل الصالح، وأن يدعوا الناس بالعلم والحكمة.

शैख़ रबी बिन हादी अल मदख़ली (अल्लाह उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाए)कहते हैं:

भाइयों मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ कि आप सलफ सालेह के रास्ते पर चलते रहें इलम, अख़लाक़ और दावत देने के ऐतबार से जिस में ना कट्टरता और ना चरमपंथ है। ऐसी दावत जिसमें धैर्य व संयम हो, दया और ऊँचे स्वभाव हों। अल्लाह की क़सम सलफी दावत इन्ही अच्छे स्वभाव से फैलती है। मैं कहता हूँ: कुछ लोग इस मनहज की तरफ़ क्रूरता से अपनी निस्बत करते हैं, जो बुरे स्वभाव और रद्दी अख़लाक़ के साथ ज़ाहिर होते हैं, जिस में यह भी है कि वह सलफियत पर सलफियत के नाम से ही चोट लगाते हैं, और इस तरीक़े से उनहोंने सलफी दावत को बदनाम कर दिया है। तो मैं नौजवानों को यह नसीहत करता हूँ कि वह अल्लाह अज़्ज़वजल का तक़वा इख़्तियार करें और लाभकारी ज्ञान सीखें और अच्छे कर्म करें और लोगों को इलम और हिकमत के साथ दावत दें।

(الذريعة إلى بيان مقاصد كتاب الشريعة 3 / 214)

तमाम सलफियों को फ़ज़ीलत अश-शैख़ अल-अल्लामा रबी बिन हादी अल मदख़ली(अल्लाह उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाए) की ख़ूबसूरत नसीहतें

قال الشيخ ربيع بن هادي المدخلي حفظه الله:-

ولا تدخلوا في خصومات بعضكم البعض، وإذا حصل شيء من الخطأ فردوه إلى أهل العلم، لا تدخلوا في متاهات وصراعات؛ لأن هذا ضيع الدعوة السلفية وأضرّ بها أضراراً بالغة ما شهدت مثله في تأريخ أهل السنة، وساعدت هذه الوسائل الإجرامية الإنترنت الشيطاني ساعد على هذه المشاكل، كل من حكه رأسه وضع بلاءه في الإنترنت، اتركوا هذه الأشياء، تكلموا بعلم يشرفكم ويشرف دعوتكم، والذي ما عنده علم لا يكتب للناس لا في إنترنت ولا في غيره، وابتعدوا عن الأحقاد والضغائن، وإلا والله ستميتون هذه الدعوة.

शैख़ रबी बिन हादी अल मदख़ली (अल्लाह उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाए)कहते हैं:

तुम एक दूसरे के साथ झगड़ों में मत दाख़िल हो। और अगर कुछ ग़लती हो जाए तो इसे अहले इलम की तरफ़ लौटाएं और आपसी कशमकश में दाख़िल ना हों। कयोंकि इसकी वजह से सलफ़ी दावत बरबाद हुई है और इससे इसे इतना ज़यादा नुक़सान पहुंचा है जिसकी मिसाल अहले सुन्नत की तारीख़ में कभी नहीं देखी गई। और इसे शैतानी इंटरनेट के मुजरिमाना वसाएल से मदद मिली है। जिस ने इन मुश्किलात में मदद की है। हर कोई जिस के सिर में खुजली है वह अपनी बला को इंटरनेट पर डाल रहा है। इन चीजों को छोड़ो, इलम से बातें करो जो तुमहें और तुम्हारी दावत को शरफ व इज़्जत बख़्शे, और जिस के पास इलम नहीं है वह लोगों के लिए ना लिखे, ना इंटरनेट पर और ना कहीं और। नफ़रत और कीना कपट से दूर रहो वरना अल्लाह की क़सम तुम इस दावत को मार डालोगे।

(الذريعة إلى بيان مقاصد كتاب الشريعة 3 / 215)

ashabulhadith.com/main/connect

ashabulhadith.com

तमाम सलफियों को फ़ज़ीलत अश-शैख़ अल-अल्लामा रबी बिन हादी अल मदख़ली(अल्लाह उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाए) की ख़ूबसूरत नसीहतें

وقال الشيخ ربيع حفظه الله ورعاه:

أنصحكم بترك الجدال والخصومة على الأنترنت وفي الساحات أيضاً أنصحكم بهذا، والذي عنده علم يتكلم بعلم، يكتب بعلم، يدعو بعلم، يدعو بالحجة والبرهان، واجتنبوا الخلاف وأسباب الفرقة لا تثيروها بينكم، وإذا حصل من الإنسان خطأ يعرض على العلماء ليعالجوه، بارك الله فيكم وسدد خطاكم وألف بين قلوبكم.

शैख़ रबी बिन हादी अल मदख़ली (अल्लाह उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाए)कहते हैं:

मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ कि इंटरनेट और अन्य मैदानों में बहस व तकरार छोड़ दो। जिस के पास इल्म है वह इल्म से बातें करे और इल्म से लिखे, इल्म से दावत दे, हुज्जत और रौशन दलीलों से दावत दे, मतभेद और गुटबाज़ी के असबाब से बचें और आपस में इसे ना भड़काएं। और अगर किसी इंसान से ग़लती हो तो उलेमा पर इसे पेश करें ताकि वह इसका इलाज करें। अल्लाह तआला आपको बरकत से नवाज़े, आपके क़दमों को सही दिशा पर चलाए और आपके दिलों में प्यार डाल दे।

(الذريعة إلى بيان مقاصد كتاب الشريعة 3 / 215)

तमाम सलफ़ियों को फ़ज़ीलत अश-शैख़ अल-अल्लामा रबी बिन हादी अल मदख़ली(अल्लाह उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाए) की ख़ूबसूरत नसीहतें

قال الشيخ ربيع بن هادي المدخلي حفظه الله:

وإن الطريقة التي عليها الشباب الآن لا تغني شيئاً بل تضر، فعلى الشباب الصبر والحكمة والتآخي على الحق والتعاون على البر والتقوى في نشر هذا الحق الذي هداهم الله إليه، وإن الشيطان ليركض بين الشباب السلفي بالخلافات التافهة، وبث فيهم التعصبات العمياء التي هي تعصبات الحزبيين تماماً؛ لأن البيئة نفثت سمومها فتأثر بعض الشباب الذين لم يهضموا الدعوة السلفية.

शैख़ रबी बिन हादी अल मदख़ली(अल्लाह उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाए)कहते हैं:

जिस तरीक़े पर आज नौजवान हैं इस्से कोई फ़ाएदा नहीं है बल्कि इस्से नुक़सान है। वह धैर्य, समझदारी और सच्चाई पर भाईचारगी रखें और इस सच्चाई जिसकी तरफ़ अल्लाह ने इन्हें हिदायत दी है उसे फैलाने के लिए नेकी और तक़वा इख़्तियार करें। निश्चित रूप से शैतान सलफी युवाओं के भीतर मतभेद को भड़काने का प्रयत्न करेगा और इन में ऐसे पक्षपात को फैलाने की कोशिश करेगा जो पूरी तरह से हिज़बियों का पक्षपात है क्योंकि माहौल ऐसा ज़हरीला हो गया है जिस से बाज़ नौजवान प्रभावित हो चुके हैं जिन्हें सलफी दावत नहीं पचती।

(الذريعة إلى بيان مقاصد كتاب الشريعة 3 / 225)

तमाम सलफ़ियों को फ़ज़ीलत अश-शैख़ अल-अल्लामा रबी बिन हादी अल मदख़ली(अल्लाह उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाए) की ख़ूबसूरत नसीहतें

قال الشيخ ربيع بن هادي المدخلي حفظه الله:

اتركوا أولاً القيل والقال، اتركوا الطعن في الأشخاص السلفيين، اتركوا الأسباب المثيرة للخلافات، أنا أنصحكم بجد يا إخوان، وأنشدكم الله أن ترحموا الدعوة السلفية وترحموا علماءها، فإنهم والله يعانون الويلات من هذه الأفاعيل، اتركوا هذا الأمور، وأقبلوا على العلم الشرعي، واحمدوا الله الذي وفقكم للسير في طريق السلف.

शैख़ रबी बिन हादी अल मदख़ली(अल्लाह उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाए)कहते हैं:

सब से पहले क़ील व क़ाल छोड़ दो। उन व्यक्तियों पर तान छोड़ दो जो सलफ़ी हैं। मतभेद को भड़काने वाले कारणों को छोड़ दो। में तुम्हें नसीहत करता हूँ ऐ भाइयों तुमसे विनती करता हूँ कि तुम सलफी दावत पर दया करो और इसके उलेमा पर दया करो, क्योंकि उन्हें इस की वजह से बहुत अधिक पीड़ा उठानी पड़ी है। इन चीज़ों को छोड़ दो और शरई ज्ञान की तरफ़ ध्यान रखो और अल्लाह का शुक्र मानो जिस ने तुम्हें सलफ़ के तरीक़े पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई।

(الذريعة إلى بيان مقاصد كتاب الشريعة 3 / 225)